देश का प्रथम स्वतंत्रता सेनानी फतेह बहादुर शाही का योगदान

भोला प्रसाद

देश की ऐसी ही स्थिति में स्वतंत्रता का एक दिवाना फतेहबहादुर शाही नामधारी राजा सारण जिला के उत्तरी–पश्चिमी छोर पर तत्कालीन रियासत हुस्सेपुर में राज करता था जिसकी रियासत सीमा सिवान की सीमा के साथ–साथ गोरखपुर के दीवान सैयद मुहम्मद की सीमा तक फैली थी। गोपालगंज सब–डिविजन का पश्चिमी क्षेत्र हुस्सेपुर की सीमा के अन्दर था, सन् 1765 में हीं शाह आलम ने बिहार, बंगाल और उड़ीसा की दीवानी अँग्रेजों को सौंप दी थी। फलस्वरूप हुस्सेपुर रियासत की मालगुजारी वसूलने का अधिकार अँग्रेजों को प्राप्त हो गया। कतिपय विद्वान सन् 1757 के पलासी युद्ध को आजादी के संधर्ष का प्रारंभ मानते हैं क्योंकि पूरे भारतवर्ष में अँग्रेजों के दुर्व्यवहार से लोग त्रस्त थें तथा उनमें घृणा का वातावरण बन रहा था। फतेह बहादुर शाही का अँग्रजो के खिलाफ बगावत स्वतंत्रता के लिए पहले संघर्ष का स्वरूप था जिसकी चिनगारी की तपीस में तत्कालीन अँग्रेजी शासन के नाकोंदम हो रहा था।